KRISHI VIGYAN KENDRA – GUDAMALANI (BARMER II)

e – Reporter

17th April – 5th May 2021

Services during

Second Covid Wave

Lock Down Period

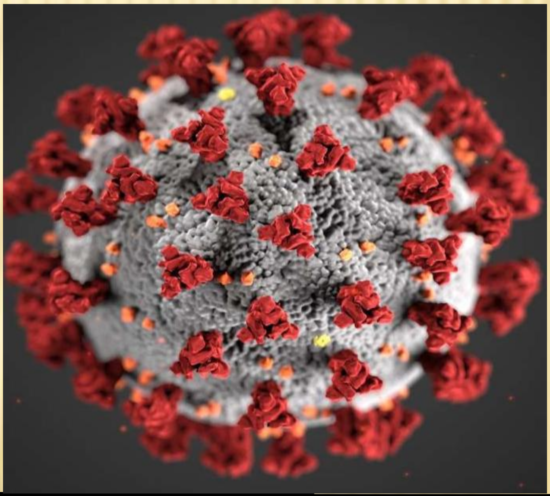

Report on Second Covid Wave Lock down Period

Farm Advisory Services

- KVK provided farm advisories through Kisan Mobile Advisory Services by covering 163 farmers in the KVK jurisdiction area
- KVK provided farm advisories and created awareness on beware of COVID-19 through 7 Whatsapp group by covering 1454 farmers in the KVK jurisdiction area
- KVK published newspaper clips on prevention of COVID19
- KVK posted in the Whatsapp group on Vaccination

अच्छी पैदावार के लिए गर्मी में जुताई करें किसान: डॉ. पगारिया

बाड़मेर | कोरोना वायरस संक्रमण के कारण लॉक डाउन की स्थिति में कृषि विज्ञान केंद्र गुड़ामालानी की ओर से ऑनलाइन ग्रीष्मकालीन जुताई पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी डॉ. प्रदीप पगारिया ने बताया कि कृषि व्यवसाय का पल्लवन और प्रवर्धन पूरी तरह से मृदा पर निर्भर है। गर्मी की गहरी जुताई का अर्थ है कि गर्मी की तेज धूप में खेत के ढाल के आर पार विशेष प्रकार के यंत्रों से गहरी जुताई करके खेत की उपरी परत को गहराई तक खोलना तथा नीचे की मिट्टी को पलटकर ऊपर लाकर सूर्य की तपती किरणों में तपाकर कीटाणु रहित करना है। ग्रीष्मकालीन जुताई से खरपतवार एवं फसल अवशेष दबकर मिट्टी में मिल जाते है तथा नुकसानदायक कीड़े-मकोड़े एवं उनके अंडे अन्य परजीवी खरपतवार के बीज आदि मिट्टी के ऊपर आने से खत्म हो जाते हैं। साथ ही जिन स्थानों या खेतों में गेहूं व जौ की फसल में निमेटोड का प्रयोग होता है, वहां पर इस रोग की गांठें जो मिट्टी के अंदर होती है वो जुताई करने से उपर आकर कड़ी धूप में मर जाती हैं। बारानी खेती वर्षा पर निर्भर करती है इसलिए बारानी परिस्थितियों में वर्षा के पानी का अधिकतम संचयन करने के लिए ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करना आवश्यक है। जिले में लगभग 18 लाख हेक्टेयर में खरीफ की बुआई जाती है, इसके लिए ग्रीष्मकालीन जुताई आवश्यक है।

ऑनलाइन ग्रीष्मकालीन जुताई कार्यक्रम आयोजित

– सहकार समाचार, बाड़मेर।

कोरोना वायरस संक्रमण के कारण लॉकडाउन की स्थिति में कृषि विज्ञान केंद्र गुडामालानी की ओर से ऑनलाइन ग्रीष्मकालीन जुताई पर आयोजित प्रोग्राम में बोलते हुए कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी डॉ. प्रदीप पगारिया ने बताया कि कृषि व्यवसाय का पल्लवन और प्रवर्धन पूरी तरह से मृदा पर निर्भर है। गर्मी की गहरी जुताई का अर्थ है कि गर्मी की तेज धूप में खेत के ढाल के आर-पार विशेष प्रकार के यंत्रों से गहरी जुताई करके खेत की उपरी परत को गहराई तक खोलना तथा नीचे की मिट्टी को पलटकर ऊपर लाकर सूर्य की तपती किरणों में तपाकर कीटाणु रहित करना है।

पगारिया ने बताया कि ग्रीष्मकालीन जुताई से खरपतवार एवं फसल अवशेष दबकर मिट्टी में मिल जाते है तथा नुकसानदायक कीड़े-मकोड़े एवं उनके अंडे अन्य परजीवी खरपतवार के बीज आदि मिट्टी के ऊपर आने से खत्म हो जाते है, साथ ही जिन स्थानो या खेतों में गेहूं व जौ की फसल में निमेटोड का प्रयोग होता है। वहाँ पर इस रोग की गाँठे जो मिट्टी के अंदर होती है वो जुताई करने से उपर आकर कड़ी धूप में मर जाती हैं। बारानी खेती वर्षा पर निर्भर करती है, इसलिए बारानी परिस्थितियों में वर्षा के पानी का अधिकतम संचयन करने के लिए ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जिले में लगभग 18 लाख हेक्टेयर में खरीफ की बुवाई जाती है उसके लिए ग्रीष्मकालीन जुताई आवश्यक है।

KVK – GUDAMALANI (BARMER II)

Report on Second Covid Wave Lock down Period

Farm Advisory Services

KVK – GUDAMALANI (BARMER II)

Report on Second Covid Wave Lock down Period

Farm Advisory Services

- गर्मी की फसलो में 8–10 दिन के अंतराल पर हल्की सिंचाई सुबह या शाम को करें।
- रबी फसलों की कटाई के पश्चात फसलों के अवशेष चारे के रूप में काम आते हैं उनका पशुओं को खिलाने के लिए भूसा तैयार करें व अन्य फसलो के अवशेषों को गर्मी की गहरी जुताई के साथ खेत की मिट्टी में अच्छी तरह से मिला दें जिससे मिट्टी में कार्बन की मात्रा बनी रहे।
- रबी फसलों की कटाई के तुरन्त बाद खाली खेतों की गहरी जुताई कर जमीन को खुला छोड दें ताकि खरपतवारों के बीज नष्ट हो जायें।
- सुरक्षित अनाज भण्डारण के लिए भंडारित अनाज में नमी की मात्रा 10 प्रतिशत से कम रखें। भण्डारण गृह को वायुरोधी बनाकर सेलफॉस पाउच 10 ग्राम प्रति 3 क्विंटल के हिसाब से उपयोग करें।
- बगीचों में ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई, गुडाई एवं उवर्रक प्रबधन करें।
- ग्रीष्म कालीन सब्जियों जैसे लौकी, कद्दू, चिकनी तुरई, खीरा एवं ककड़ी में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- भोजन में विटामिन सी से भरपूर व प्रोटीन युक्त भोजन जैसे संतरा नारंगी, दालों, दूध पनीर व दही का सेवन करें।
- चारे का उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से करें।
- पशुओं को खुरपका व मूंहपका रोग बचाव के लिए टीका लगवायें।
- पशुओं को पीने का ताजा पानी हमेशा उपलब्ध रखें। दिन में चार बार पिलावें।
- पशुओंको चारा सुबह शाम ठंडे मौसम में खिलावें एवं प्शु आहार में खनिज लवण की आपूर्ति करें।
- पशु आवास में फिनाईल व हाइपोक्लोराइड का समय–समय पर छिड़काव करें।
- खेत में इस्तेमाल किए गए कपड़े धोलें और धूप में सूखने दें दोबारा 48 घंटों के बाद ही इस्तेमाल करें दूसरे दिन वही कपड़े न पहनें। खेती कार्य में स्वयं के औजार का उपयोग करे। बीडी–सिगरेट हुक्का एक साथ बैठकर नहीं पीयें। पीने के लिए पानी व गिलास स्वयं का साथ ले जायें। खेतों में प्र्याप्त मात्रा में साबुन, डिटर्जेंट व पानी । हमेशा एक–दूसरे से कम से कम 6 फीट की दूरी बनाये रखें सोशल डिस्टेंस को बनाये रखें।
- यदि किसी को खांसी, सिरदर्द, बदनदर्द, सर्दी और बुखार के लक्षण हो तो तुरन्त नजदीकी अस्पताल में संपर्क करें। मुंह पर हमेशा मास्क लगायें।

KVK – GUDAMALANI (BARMER II)

Report on Second Covid Wave Lock down Period

बागवानी फसलों के लिए सलाह

- **नींबू**

नींबू वर्गी फल वृक्षों में फल झड़ने से रोकने के लिए 2, 4 D 1 ग्राम व टीलट 100 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें इस समय नींबू वर्गीय फल वृक्षों में सिट्रस सील्ला लीफ माइनर व माईटस का प्रकोप हो सकता है इसलिए नियमित रूप से बागो का निरीक्षण करें तथा आवश्यकता होने पर उचित दवा का छिड़काव करें

- **बेर**

बेर बाड़मेर जिले की विशेष फसल है अभी जहां बेर के वृक्ष खड़े हैं उनमें कटाई शुरू करें एवं कटाई करने के बाद नीचे थाले उनको भी साफ करते रहें और उनमें फिपरोनिल का प्रयोग करें

- **खजूर**

जिले में खजूर का लगभग 120 हैक्टर एरिया में खजूर है और खजूर की फसल इस समय बाजार में आने वाली हैं और खजूर में विशेषकर बराई मेडजूल यह किस में जो कि बाड़मेर जिले में लगी हुई है उसमें खजूर पक्कर लगभग तैयार हैं अच्छी तरह से ग्रेडिंग पैकिंग करें ताकि उचित भाव मिल सके

- सामाजिक और शारीरिक दूरी का ध्यान रखते हुए यंत्रों को बार-बार धोते रहें और खेत में कार्य करते समय मुंह पर मास्क का प्रयोग अवश्य करें
- औजार व मशीन का विशेष ध्यान रखें एवं सफाई व उचित सैनिटेशन करके ही प्रयोग में लें
- इस समय सब्जियों में भी फूल आ रहे हैं उस में सिंचाई का विशेष ध्यान रखें
- अपने मोबाइल में आरोग्य सेतु एप डाउनलोड कर ले

Report on Second Covid Wave Lock down Period

बागवानी फसलों का विशेष ध्यान रखें : पगारिया

नवज्योति/गुड़ामालानी।

जिले में लगभग 7000 हैक्टर में अनार, 570 में बेर, 120 हैक्टर में खजूर, 100 हेक्टर में सब्जी तथा 50 हैक्टर में अन्य बागवानी फसलें लगी हुई है।

लॉक डाउन के कारण बागवानी फसलों के लिए कृषि विज्ञान केंद्र गुड़ामालानी के प्रभारी डॉ. प्रदीप पगारिया ने विशेष सलाह देते हुए बताया कि बागवानी फसलों का विशेष ध्यान रखें साथ ही गर्मी भी बढ़ने लग गई हैं बागों में लगातार नमी बनाए रखें जो बाग ड्रिप संयंत्र पर आधारित है उन्हें सप्ताह में दो बार ड्रिप चलाएं।

साथ ही डॉण् पगारिया ने बताया कि बेर बाड़मेर जिले की विशेष फसल है अभी जहां बेर के वृक्ष खड़े हैं उनमें कटाई शुरू करें एवं कटाई करने के बाद नीचे थाले उनको भी साफ करते रहें। खजूर का लगभग 120 हैक्टर एरिया में खजूर है और खजूर की फसल इस समय बाजार में आने वाली हैं और खजूर में विशेषकर बराई मेडजूल यह किस में जो कि बाड़मेर जिले में लगी हुई है उसमें खजूर पक्कर लगभग तैयार हैं तो उचित कर पैकिंग कर एवं विशेष सावधानी बरतते हुए चौड़ाई में भी सामाजिक और शारीरिक दूरी का ध्यान रखते हुए यंत्रों को बार.बार धोते रहें।

अनार में तन भदक संक्रमण की संभावना

अनार का जिले में लगातार एरिया बढ़ रहा है उसके लिए विशेष सावधानी रखने की जरूरत है जो बगीचे विश्राम अवस्था वाले स्थिति में है जिनमें जनवरी-फरवरी में उर्वरक और खाद दी गई हैं। उनमें हल्की सिंचाई करें फसल रेगुलेशन से एक 2 माह पूर्व सिंचाई बंद कर दें 15 दिनों के अंतराल पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें शुष्क समय होने के कारण अनार में तन भदक का संक्रमण हो सकता है इसलिए जिन तनों में प्रभाव देखें उन क्षेत्रों में 10 मिली लीटर प्रति लीटर पानी में डाई क्लोरो वाश को इंजेक्ट करें और गिली मरदा से छेद को ढक दें।

अधिक सिंचाई से झड़ सकते हैं फूल

इस समय सब्जियों में भी फूल आ रहे हैं उसमें सिंचाई का विशेष ध्यान रखें ना आवश्यकता से अधिक से चेक करें अगर आवश्यकता से अधिक सिंचाई की फूल झड़ने की समस्याएं आ सकती है। अतः किसान भाई आवश्यकता से अधिक सिंचाई भी नहीं करे आवसकता से कम भी नहीं करें।

जिले के सभी किसान भाइयों को सलाह दी जाती हैं कि इससे वायरस संक्रमण के दौर में और लोकडाउन के समय जो भी किसान भाई बागवानी कर रहे हैं उनमें सब्जी फलों फलों की तड़ाई उचित समय पर करके अच्छी तरह से ग्रेडिंग पैकिंग कर बाजार में बेचें ताकि उचित भाव मिल सके।

KVK – GUDAMALANI (BARMER II)

Report on Second Covid Wave Lock down Period

पशुओं के लिए सलाह

•पशुपालको को सलाह दी जाती है कि वे चारे का उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से करें तथा पशुओं के जीवन को बचाने के लिए ताजा चारा के उपलब्ध होने तक उत्पादन राशन में कटौती कर जीवन यापन के लिए आहार दें।

• पशुओं को खुरपका व मूंहपका रोग बचाव के लिए टीका लगवायं।

• पशुओं को पीने का ताजा पानी हमेशा उपलब्ध रखें। दिन में चार बार पिलावें।

• पशुओं को चारा सुबह शाम ठंडे मौसम में खिलावें एवं पशु आहार में खनिज लवण की आपूर्ति करें।

• पशु आवास में फिनाईल व हाइपोक्लोराइड का समय–समय पर छिड़काव करें।

• पशुओं को नियंत्रित रखने के लिए बांधी गई चैन या रस्सी को भी वाशिंग पाउडर से धोते रहें।

• गर्मी के समय में वयस्क पशुओं के लिए आवास, पोषण और स्वास्थ्य संबंधी प्रबंधन की उचित व्यवस्था करें। संक्रमण से बचाव के लिए 1 प्रतिशत सोडियम हाईपोक्लोराइट या फेनोलिक कीटाणुनाशक से नियमित रूप से पशु आवास को साफ करें।

• पशुओं की उत्पादकता बनाए रखने के लिए वयस्क दूधारू और गर्भवती गायों को 50–100 ग्राम प्रतिदिन प्रति गाय पुरक आहार के रूप में देंवें।

• पशुओं को नियमित रूप से नमक देवें। पशुओं को हर तीन माह के टंतराल पर कृमिनाशक देवें। डेयरी किसानों को बेहतर मूल्य प्राप्ति के लिए शाम के दूध का पनीर, मक्खन या घी ब्नाना चाहिए।

KVK – GUDAMALANI (BARMER II)

Report on Second Covid Wave Lock down Period

पशुओं के लिए सलाह

राजस्थान पत्रिका patrika.com
बाड़मेर, शुक्रवार, 30 अप्रेल, 2021

. बसरा . बाखासर

पशुपालक करें कोरोना गाइड लाइन की पालना

बाड़मेर.खेतों में हरे चारे की कटाई के दौरान यों बनाएं रखे सोशल डिस्टेंशन। फाइल फोटो

पशुधन की देखभाल को लेकर दिए सुझाव

बाड़मेर @ पत्रिका . कोरोना संकट के बीच पशुपालकों को पशुधन की देखभाल के दौरान कोरोना गाइड लाइन की पालना करने सहित अन्य सावधानियां की जानकारी कृषि विज्ञान केन्द्र गुडामालानी दी है। केन्द्र के प्रभारी डॉ. प्रदीप पगारिया ने बताया कि बाड़मेर जिला पशु बाहुल्य है, ऐसे में जिले के पशुपालकों को पशुओं के प्रबंधन और उपज के विपणन के दौरान सामान्य सावधानियां और सुरक्षात्मक उपाय रखने चाहिए।

किसान संक्रमण से बचाव के लिए 1 प्रतिशत सोडियम हाइपोक्लोराइट से नियमित अंतराल से पशु और मुर्गियों के आवास को साफ करें। पशुओं की ... बनाए रखने के लिए व्यस्क दुधारू और गर्भवती गायों को 50 से 100 ग्राम प्रतिदिन प्रति गाय पूरक आहार के रूप में दें। पशुओं को खुर पका, मुंह पका रोग के टीके लगवाएं। पशुओं को दिन में 4 से 5 बार पीने का ताजा पानी पिलाएं। पशुओं को चारा सुबह-शाम ठंडे मौसम में खिलाएं, साथ ही पशु आहार में खनिज लवण की आपूर्ति करें।

KVK – GUDAMALANI (BARMER II)

Report on Second Covid Wave Lock down Period

बकरी पालको के लिए सलाह

आंत्राविशाक्तता

बकरियों में यह रोग क्लास्टीडियम परप्रिफजेन्स जीवाणु टाईप के द्वारा आंतो में उत्पन्न होता है। यह जीवाणु आंत में रहता है। इस बीमारी से ष्षु को अचानक से पेट में तीव्र दर्द, जमीन पर गिरकर घिसटना या जमीन पर पड़े रहना। इससें 5–24 घंटे में मृत्यु हो जाती है।

उपचारः–

इसके उपचार में बकरी को 2–5 ग्राम खने का सोडा तथा टेटांसाइक्लिीन पाउडर का घोल दिन में 2–3 बार पिलायं, इसके बचाव हेतु इन्टेरोक्सीमिया का वार्शिक टीकाकरण मुख्य उपाय है। साथ ही ष्षुओ को दिय जाने वाले दाने/चारे में अचानक कोई परिवर्तन न करे।

मुंहपका व खुरपका रोगः–

यह संकामक विशाणु जनित रोग है जो फटे खुर वाले पषुओं में होती है। यह एक बकरी से दूसरी बकरी में हवा द्वारा दूशित पानी पीने अथवा रोगी बकरी के साथ चारा खाने से फैलती है। इसमें मुंह के भीतरी सतह, जीभ, पैर, थन व अयन पर छाले पड जाते है।

उपचारः–

रोगी पषु को अलग रखे, नरम एवं सुपाच्य भोजन देना चाहिए। जीवाणु नाषक एवं दर्द निवारक दवा की सुई लगवाने तथा घाव छालों की एन्टीसेप्टिक दवाओं से धुलाई करे। इस रोग से बचाव के लिए प्रतिवर्श 6 माह के अन्तराल पर मार्च–अप्रैल तथा सितम्बर–अक्टुबर में पषु को इसके टिके लगवाय।

बकरी प्लेग ¼पी.पी.आर.½ :–

यह अत्यंत संकामक विशाणु जनित रोग है है जिसके होने से बाड़े की 90 प्रतिषत बकरियों का ग्रसित हो जाती है। तथा 80 प्रतिषत तक मृत्यु दर हो सकती है। ग्रसित बकरियों का तापमान 105–106 डिग्री फैरेनहाइट हो जाता है। मुंह में छाले, काले रंग के दस्त आंखों व नाक से पानी आना, सांस लेने में परेषानी होती है। मुंह के अन्दर के मसुड़े तथा जीभ लाल हो जाती है।

उपचारः–

पशु को स्वस्थ पषु से अलग रखे । तथा 4–12 माह के मेमनों में यह रोग तीव्र रूप से होता है। इस रोग से बचाव हेतु सभी बकरी तथा बच्चों को 4 माह या उससे अधिक उम्र वाली बकरी की पी.पी. आर. का टीका लगवाऐ।

अत :परजीवीः–

बकरियों के षरीर में गोलकृमि, यकृत कृमि एवं फीता कृमि वर्ग के कई अत :पर जीवी पाय जाते है। य परजीवी गन्दे पानी व दूशित चारे के माध्यम से प्रवेष कर आंत की ष्लेज्मा झिल्ली से चिपक करष्षु को कमजोर कर देते है। ग्रसित बकरी को बदब ुदार दस्त आते है। षरीर में खून की कमी हो जाती है।

उपचारः–

इसके बचाव हेतु कृमिनाषक औशधियां वर्श में कम से कम दो बार बरसात के पहले और बरसात के बाद अवष्य देनी चाहिए। इसके लिए एलबेन्डाजोल 7.5 मि.ली. ग्राम/ किलो शारीरिक भार के अनुसार देनी चाहिए।

KVK – GUDAMALANI (BARMER II)

Report on Second Covid Wave Lock down Period

किसानो के लिए सलाह

ग्रीष्मकालीन जुताई से बारानी फसलों को होगा फायदा

ग्रीष्मकालीन जुताई को लेकर ऑनलाइन कार्यक्रम

बाड़मेर @ पत्रिका . कृषि विज्ञान केंद्र गुड़ामालानी की ओर से ग्रीष्मकालीन जुताई की जानकारी को लेकर ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी डॉ. प्रदीप पगारिया ने कहा कि कृषि व्यवसाय का पल्लवन और प्रवर्धन पूरी तरह से मृदा पर निर्भर है। गर्मी की गहरी जुताई का अर्थ है कि गर्मी की तेज धूप में खेत के ढाल के आर - पार

बाड़मेर. ग्रीष्मकालीन जुताई करता किसान। पत्रिका

इसलिए जरूरी है जुताई

ग्रीष्मकालीन जुताई से खरपतवार एवं फसल अवशेष दबकर मिट्टी में मिल जाते है तथा नुकसानदायक कीड़े- मकोड़े एवं उनके अंडे अन्य परजीवी खरपतवार के बीज आदि मिट्टी के ऊपर आने से खत्म हो जाते हैं। जिन स्थानों या खेतों में गेहू व जौ की फसल में निमेटोड का प्रयोग होता है। वहां पर इस रोग की गांठे जो मिट्टी के अंदर होती है वो जुताई करने से ऊपर आकर कड़ी धूप में मर जाती हैं। उन्होंने कहा कि बारानी खेती वर्षा पर निर्भर करती है, इसलिए बारानी परिस्थितियों में वर्षा के पानी का अधिकतम संचयन करने के लिए ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करना आवश्यक है। जिले में लगभग 18 लाख हैक्टेयर में खरीफ की बुवाई जाती है उसके लिए ग्रीष्मकालीन जुताई जरूरी है।

विशेष प्रकार के यंत्रों से गहरी जुताई करके खेत की ऊपरी परत को गहराई पलटकर ऊपर लाकर सूर्य की तपती किरणों में तपाकर कीटाणु रहित

बंजर खेतों को उत्पादक बनाने की संजीवनी है हरी खाद : पगारिया

नवज्योति/गुड़ामालानी। हरी खाद सबसे सरल व कम लागत वाली विधि है जिसके माध्यम से भूमि को उपजाऊ बनाया जा सकता है। इसके प्रयोग से भूमि में देशी केंचुओं की संख्या में वृद्धि होती है तथा फसलों के लिए आवश्यक सभी मुख्य व सूक्ष्म पोषक तत्वों, आर्गेनिक कार्बन, एंजाइम्स विटामिन्स हार्मोन्स, विभिन्न मित्र बैक्टेरिया व मित्र फंगस, आर्गेनिक एसिड्स आदि में वृद्धि होती है विशेष रूप से भूमि में नाइट्रोजन भंडारण होता है तथा हमारी भूमि उपजाऊ बनती है। प्रदीप पगारिया प्रभारी कृषि विज्ञान केन्द्र गुड़ामालानी ने बताया कि किसान भाई कई वर्षों से लगातार अपने खेतों में रासायनिक खाद उर्वरक तथा अन्य जहरीले रसायनों का प्रयोग कर खेती कर रहे है। गोबर की विभिन्न तरह की खादों व अन्य जैविक खादों का प्रयोग लगभग न के बराबर हो रहा है अथवा बंद कर दिया गया है। जिसके परिणाम स्वरूप हमारी भूमि में ऑर्गेनिक कार्बनए मित्र सूक्ष्म जीव, मित्र फंगस, आवश्यक

किसान हरी खाद लगाकर अपने खेतों को उपजाऊ बनाएं

पोषक तत्वों की कमी होती जा रही है। भूमि की भौतिक व रासायनिक संरचना बिगड़ चुकी है। जमीन का पोलापन कठोरता में बदल रहा है। भूमि में लवणीयता तथा क्षारीयता बढ़ रही है। हमारी भूमि मृत होती जा रही है। जिससे फसलों का उत्पादन स्थिर हो गया है अथवा कम होता जा रहा है, अगर यही हाल रहा तो एक दिन हमारी खेती बंजर हो सकती है। यदि हमें अपने खेतों को बंजर होने से बचाना है तथा अपनी अगली पीढ़ी के लिए कृषि क्षेत्र में एक अच्छा भविष्य देना है तो हमे अपने खेतों में नियमित गोबर से बनी विभिन्न तरह की खादो तथा नियमित हरी खाद का प्रयोग करना होगा। इसके लिए हमें गेंहू फसल की कटाई के बाद अप्रैल से मई माह में पानी की व्यवस्था वाले खेतों में तथा वर्षा आधारित क्षेत्रो में मानसून आने पर हरी खाद की बुआई करनी चाहिए। हरी खाद के लिए तेजी से बढ़ने वाली दलहनी फसलें जैसे ढेंचा, सनई, लोबिया, ग्वार, मूंग उड़द आदि की बुआई कर सकते है। मेरे अनुभव के हिसाब से हरी खाद के लिए ढेंचा एवं सनई सबसे अधिक उपयुक्त रहती है तथा इनसे बायोमास भी अधिक प्राप्त होता है।

किसानो के लिए सलाह

सावधानी से लें मृदा का नमूना : पगारिया

नवज्योति/गुड़ामालानी।

कृषि विज्ञान केंद्र गुड़ामालानी के वरिष्ठ वैज्ञानिक अध्यक्ष डॉ. प्रदीप पगारिया ने बताया कि कोरोना के दौरान सभी किसानों से आग्रह है कि मृदा का नमूना लेते समय कुछ सावधानियां और स्वयं को जितना हो सके इस महामारी से बचायें क्योंकि बचाव ही एक मात्र उपाय है। मृदा का नमूना लेते समय सामाजिक दूरी का पालन करें तथा बार-बार हाथों को सेनिटाइज करें या साबुन से हाथों को अच्छी तरह साफकरें। गंगा राम माली बताया कि मृदा के ऊपर की घास-फूस साफ कर लें तत्पश्चात भूमि की सतह से फावड़े या की सहायता से वी आकार का 15 से.मी. गहरा गड्ढा बना कर एक ओर से ऊपर से नीचे तक दो सेमी. मोटी 5-7 अलग-अलग स्थानों से मृदा के नमूने लें और सबको एक तगारी या साफ कपड़े में इकटा करें। अगर खड़ी फसल से नमूना लेना हो, तो मृदा का नमूना पौधों की कतारों के बीच खाली जगह से लें।

हर नमूने को एक साफ कपड़े की थैली में डालकर उसके ऊपर नाम, पता और खेत का नम्बर का लेबल लगायें एवं खेत व खेत की फसलों का पूरा ब्यौरा सूचना पर्चा में लिखें और मिट्टी जांच प्रयोगशाला में भेज दें। मृदा परीक्षण हेतु नमूना फसल बुबाई से एक माह पूर्व प्रयोगशाला में भेजना चाहिए।

Report on Second Covid Wave Lock down Period

किसानो के लिए सलाह

अच्छी पैदावार के लिए गर्मी में जुताई करें किसान: डॉ. पगारिया

बाड़मेर | कोरोना वायरस संक्रमण के कारण लॉक डाउन की स्थिति में कृषि विज्ञान केंद्र गुड़ामालानी की ओर से ऑनलाइन ग्रीष्मकालीन जुताई पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी डॉ. प्रदीप पगारिया ने बताया कि कृषि व्यवसाय का पल्लवन और प्रवर्धन पूरी तरह से मृदा पर निर्भर है। गर्मी की गहरी जुताई का अर्थ है कि गर्मी की तेज धूप में खेत के ढाल के आर पार विशेष प्रकार के यंत्रों से गहरी जुताई करके खेत की उपरी परत को गहराई तक खोलना तथा नीचे की मिट्टी को पलटकर ऊपर लाकर सूर्य की तपती किरणों में तपाकर कीटाणु रहित करना है। ग्रीष्मकालीन जुताई से खरपतवार एवं फसल अवशेष दबकर मिट्टी में मिल जाते है तथा नुकसानदायक कीड़े-मकोड़े एवं उनके अंडे अन्य परजीवी खरपतवार के बीज आदि मिट्टी के ऊपर आने से खत्म हो जाते हैं। साथ ही जिन स्थानों या खेतों में गेहूं व जौ की फसल में निमेटोड का प्रयोग होता है, वहां पर इस रोग की गांठें जो मिट्टी के अंदर होती है वो जुताई करने से उपर आकर कड़ी धूप में मर जाती हैं। बारानी खेती वर्षा पर निर्भर करती है इसलिए बारानी परिस्थितियों में वर्षा के पानी का अधिकतम संचयन करने के लिए ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करना आवश्यक है। जिले में लगभग 18 लाख हेक्टेयर में खरीफ की बुआई जाती है, इसके लिए ग्रीष्मकालीन जुताई आवश्यक है।

KVK – GUDAMALANI (BARMER II)

Report on Second Covid Wave Lock down Period

INPUTS SERVICES

- Vermicompost - 25 Kg (05 farmers)
- Azolla - 05 Kg (03 farmers)
- Waste Decomposer - 01 litres (6farmers)
- Nutrition Garden Seeds - 200 gm (11 farmers)
- Soil Water Testing – 17 samples (17 farmers)
- Mask Distributed – 250
- Vegetable Seedling - 750

KVK – GUDAMALANI (BARMER II)

Report on Second Covid Wave Lock down Period

ONLINE TRAINING PROGRAMME FOR FARMERS

- One day training programme on Training on Cultivation of Cucurbits (03.05.2021)
- One day Training programme on Summer deep ploughing (01.05.2021)
- Organised EARTH DAY virtually on 22.04.2021

हम एक दिन ही क्यों धरती को बचाने की करें बात

विश्व पृथ्वी दिवस पर वेबीनार का आयोजन

बाड़मेर. विश्व पृथ्वी दिवस पर गुरुवार को केवीके गुड़ामालानी में वर्चुअल वेबीनार हुआ। इसमें केवीके अध्यक्ष एवं कृषि वैज्ञानिक डॉ. प्रदीप पगारिया ने कहा कि विश्व पृथ्वी दिवस मनाने का मकसद है धरती को बचाना यानि धरती पर जो जीवन को बनाए रखने का चक्र है, उसे बनाए रखना। हम एक दिन ही क्यों धरती को बचाने की बात करें। संकल्प हो कि हर दिन धरती बचाने का प्रयास करेंगे। पृथ्वी को बचाना है तो हम सबसे पहले पेड़-पौधों को बचाएं और अधिकाधिक पौधे लगाएं। डॉ. हरिदयाल व डॉ. बाबूलाल ने कहा कि उर्वरकों, खरपतवारनाशी, कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग से धरती का धैर्य अब टूटने लगा है। हमने अधिकाधिक उत्पादन लेने के उद्देश्य से कभी यह नहीं सोचा कि हमारी धरती माता की सेहत कितनी बिगड़ती जा रही है। अनिल, बोहराराम, देवाराम ने सुझाव दिया कि प्राचीन खेती के ज्ञान के साथ आधुनिक विज्ञान की प्रकृति मित्र तकनीकों जैसे लाभदायक सूक्ष्मजीव, फरोमोन आदि का प्रयोग कर उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है। अमराराम ने कहा कि पृथ्वी के बीना जीवन संभव नहीं है। डूंगराराम ने कहा कि हमें अधिक से अधिक पेड़-पौधों को लगाना चाहिए, जिससे की वातावरण संतुलन बनाया जा सके।

KVK – GUDAMALANI (BARMER II)

Report on Second Covid Wave Lock down Period

ONLINE TRAINING PROGRAMME FOR FARMERS

बाड़मेर, मंगलवार, 04 मई, 2021

लोर . बसरा . बाखासर

पत्रिका डिजिटल कनेक्ट

बदलते मौसम में कद्दुवर्गीय सब्जियों का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता

वर्चुअल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

बाड़मेर. कृषि विज्ञान केन्द्र गुड़ामालानी की ओर से कद्दुवर्गीय सब्जियों की खेती पर वर्चुअल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बोलते हुए केन्द्र प्रभारी डॉ. प्रदीप पगारिया ने बताया कि जिले में लगभग 5 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में कद्दुवर्गीय सब्जियां बोई जाती है।

पगारिया ने कहा कि वर्तमान समय में राज्य में कोरोना की दूसरी लहर के तहत महामारी रेड अलर्ट-जन अनुशासन पखवाडा चल रहा है जिसमें किसान दिशा निर्देशों की पालना अनिवार्यरूप से करें। बढ़ते तापमान एवं बदलते मौसम में कद्दुवर्गीय सब्जियों का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। डॉ. हरिदयाल चौधरी ने बाड़मेर में सिंचाई के पानी की कमी को देखते हुए ग्रीष्मकाल में कद्दुवर्गीय सब्जियों की खेती को बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति व मल्चिंग पर करने की सलाह दी, जिससे कम पानी में अधिक से अधिक उत्पादन व किसान की आय में वृद्धि हो सके।

डॉ. बाबू लाल जाट ने कद्दुवर्गीय सब्जियों में विभिन्न प्रकार के कीट, रोग के समन्वित प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। प्रगतिशील किसान बोहराराम सियोल, भूराराम चौधरी व छगनलाल ने सब्जियों में आने वाली विभिन्न समस्याओं के बारे में बताया।

बाड़मेर. वर्चुअल बैठक में शामिल किसान।

कार्यक्रम • किसानों को सब्जियों का उत्पादन बढ़ाने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र गुड़ामालानी का वर्चुअल प्रशिक्षण संपन्न

किसान ने 1300 किलो जैविक सब्जी निशुल्क की वितरित

भास्कर संवाददाता | रामजी का गोल

ओरियंट ऑर्गेनिक कृषि फार्म गांधव कला के किसान संतोष विश्नोई ने स्थानीय गांवों गांधव कला, बेरीगांव, रामजी का गोल में आम जनता और कच्ची बस्तियों में जैविक सब्जी निशुल्क वितरित की। इस दौरान 1300 किलो सब्जियां निशुल्क बांटी। विश्नोई ग्रीन हाउस, शेड नेट हाउस व खुले में बूंद बूंद सिंचाई से पिछले तीन साल से सब्जियों की खेती करते हैं। लोगों से कोरोना महामारी के बचाव से संबंधित सावधानी बरतने व अति आवश्यक हो तो ही घर से मास्क लगा कर ही बाहर निकलने की सलाह दी। साथ में रामजी का गोल पुलिस चौकी स्टाफ ओम प्रकाश मीणा भी साथ रहे और लोगो को समझाइश की।

सब्जियों की खेती के लिए वर्चुअल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

गुड़ामालानी | वर्तमान समय में राज्य में कोरोना की दूसरी लहर के तहत महामारी रेड अलर्ट-जन अनुशासन पखवाड़ा चल रहा है। इसमें कृषि को ध्यान में रखते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र गुड़ामालानी द्वारा लगातार किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए वर्चुअल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन किए जा रहा है। इसी कड़ी में केन्द्र द्वारा सोमवार को कद्दुवर्गीय सब्जियों की खेती पर वर्चुअल प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें बोलते हुए केन्द्र प्रभारी डॉ. प्रदीप पगारिया ने बताया कि जिले में लगभग 5000 हेक्टेयर क्षेत्र में कद्दुवर्गीय सब्जियां बोई जाती है। बढ़ते तापमान एवं बदलते मौसम में कद्दुवर्गीय सब्जियों का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। डॉ. हरिदयाल चौधरी ने बताया कि बाड़मेर में सिंचाई के पानी की कमी को देखते हुए ग्रीष्मकाल में कद्दुवर्गीय सब्जियों की खेती को बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति व मल्चिंग पर करने की सलाह दी। इससे कम पानी में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त हो सके व किसान की आय में वृद्धि हो सके। इसके साथ ही डॉ. बाबू लाल जाट ने कद्दुवर्गीय सब्जियों में विभिन्न प्रकार के कीट, रोग का समन्वित प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

KVK – GUDAMALANI (BARMER II)

Report on Second Covid Wave Lock down Period

ONLINE TRAINING PROGRAMME FOR FARMERS

कोरोना को धयान में रखते हुए हेल्पलाइन नंबर जारी

● सबसिटी सुपरफास्ट

गुड़मालाणी। कोरोना महामारी की दूसरी लहर ने देशभर में भारी तबाही मचाई है।हर दिन लाखों लोग संक्रमित हो रहे हैं इससे बाड़मेर भी अछूता नहीं है। बाड़मेर जिले में भी यह महामारी अपना रूप दिखा रही है तथा प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में लोग संक्रमित हो रहे हैं ऐसे में लोगों को यही सलाह दी जा रही है कि वह घर से बेवजह नहीं निकले और अगर किसी जरूरी काम से निकले तो मास्क जरूर पहने और 2 गज दूरी का ध्यान रखें।

कोरोना की इस दूसरी लहर में अगर आप अस्वस्थ महसूस कर रहे हैं तो यह बहुत जरूरी है कि सबसे पहले आप खुद को आइसोलेट कर ले और कोरोना के लक्षण दिखने पर टेस्ट जरूर करवाएं। आने वाला समय खेती के लिए बहुत जरूरी है जहां एक ओर इस महामारी ने अपना विकराल रूप ले रखा है और लोग घर से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं इसी को ध्यान में रखते हुए कृषि विज्ञान केंद्र गुडामालानी ने लॉकडाउन के दौरान 24 घंटो के लिए आज से हेल्पलाइन सेवा किसानों और पशुपालकों के लिए शुरू की है। जिसमें किसान भाई कभी भी अपनी खेतीबाड़ी से संबंधित समस्या का समाधान ,नवीन किस्मों के बारे में, खरीफ फसलों के बारे में, जायद की फसल के बारे में ,पशुपालन के प्रबंधन के बारे में ,नर्सरी के बारे में बागवानी के बारे में एवं अन्य खेतीबाड़ी से संबंधित जानकारी विशेषज्ञों से 24 घंटे कॉल करके या व्हाट्सएप द्वारा टेक्स्ट मैसेज द्वारा या वीडियो कॉल के जरिए बात कर अपनी समस्या का समाधान कर सकते हैं। केंद्र के प्रभारी डॉ प्रदीप पगारिया ने बताया कि इस महामारी को देखते हुए केंद्र द्वारा समय-समय पर विभिन्न माध्यमों से किसानों तक जानकारी पहुंचाई जा रही है ।

इसी कड़ी में निशुल्क हेल्पलाइन सेवा 24 घंटे लॉकडाउन में खुली है जिसमें किसान भाई विशेषज्ञों से इन नंबरों 9829155490, 9983883848, 9416441197, साथ ही फसल के साथ साथ मौसम के बारे में भी में जानकारी के वी के गुडामालानी एप्प के द्वारा अपने सवालो का समाधान भी कर सकते है और जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

किसान हेल्प लाइन केन्द्र स्थापित

विशेषज्ञों से 9829155490, 9983883848, 9416441197 नम्बरों पर कर सकते हैं सपर्म्क

केवीके गुड़ामालानी में चौबीस घंटे रहेगी सुविधा, किसानों की समस्याओं का होगा समाधान

बाड़मेर @ पत्रिका . कोरोना महामारी की दूसरी लहर ने देशभर में भारी तबाही मचाई है। हर दिन लोग संक्रमित हो रहे हैं इससे बाड़मेर भी अछूता नहीं है। बाड़मेर जिले में भी यह महामारी अपना रूप दिखा रही है तथा प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में लोग संक्रमित हो रहे हैं, ऐसे में किसानों को कृषि संबंधी जानकारी के लिए घरों से बाहर नहीं आना पड़ इसको लेकर कृषि विज्ञान केन्द्र ने हेल्प लाइन केन्द्र स्थापित किया है।

केन्द्र प्रभारी डॉ. प्रदीप पगारिया ने बताया कि कृषि विज्ञान केंद्र गुडामालानी ने लॉकडाउन के दौरान 24 घंटो के लिए मंगलवार से हेल्पलाइन सेवा किसानों और पशुपालकों के लिए शुरू की है। इसमें किसान कभी भी अपनी खेतीबाड़ी से संबंधित समस्या का समाधान, नवीन किस्मों, खरीफ फसलों, जायद की फसल, पशुपालन के प्रबंधन, नर्सरी एवं अन्य खेतीबाड़ी से संबंधित जानकारी विशेषज्ञों से 24 घंटे कॉल करके या सोशल ग्रुप से मैसेज या वीडियो कॉल के जरिए बात कर प्राप्त कर सकते हैं। निशुल्क हेल्पलाइन सेवा 24 घंटे लॉकडाउन में खुली है जिसमें किसान विशेषज्ञों से 9829155490, 9983883848, 9416441197, साथ ही फसल के साथ साथ मौसम के बारे में भी में जानकारी केवीके गुड़ामालानी ऐप से ले सकते हैं।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गुडामालानी–बाड़मेर

(COVID-19)

से लड़ने के लिए रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाए

एक दिन में कम से कम 4 गिलास गर्म पानी पीए।

अपने दैनिक दिनचर्या में निम्न-लिखित खाद्य आपूर्ति को शामिल करें संतरा, अदरक, दही, हल्दी का दूध, ग्रीन टी, लहसून, पपीता, बादाम।

योग के माध्यम से अपना ध्यान रखें इसलिए योग करो खुद शारीरिक रुप से सक्रिय रखें - व्यायाम करे।

कृपया धुम्रपान छोड़ दें और किसी भी तंबाकु उत्पादों का सेवन न करें कृपया शराब का सेवन न करे।

सफाई के बाद, कचरे के संपर्क में आने के बाद किसी बीमार व्यक्ति के साथ संपर्क में आने के बाद किसी बीमार व्यक्ति के साथ संपर्क करने के बाद नाक साफ करने, छींकने या खांसी के बाद किसी भी पालतू जानवर के संपर्क में आने के बाद अपने घर को अच्छी तरह साफ कर

साफ मास्क पहनें बीमार लोगों के संपर्क में रहने से बचें कम से कम एक मीटर की दूरी रखें।

अपने हाथों को नियमित रुप से धोएं जब आप खाना बनाने से पहले खाना खाने से पहले

Protect yourself & your Family

हम सब साथ मिलकर कोरोनावाइरस से लड़ सकते है।